मुहावरे

मुहावरे

भाषा भावों एवं विचारों को आदान-प्रदान करने का माध्यम है। अपनी बातों को प्रभावशाली ढ़ंग से व्यक्त करने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। मुहावरों के प्रयोग से कई बार साधारण अर्थ वाले शब्दों को भी विशेष अर्थ में प्रकट किया जा सकता है।

उदाहरण -

हाथ मलना- (पछताना) समय निकल जाने पर हाथ मलने से कोई फायदा नहीं है।

1. अक्ल पर पत्थर पड़ना - (मुर्खता करना) शत्रु के पास स्वयं क्यों जा रहे हो क्या अक्ल पर पत्थर पड़ा हुआ है।

2. अक्ल का दुश्मन - (मुर्ख) उसे समझाने से कोई फायदा नहीं है, वह अक्ल का दुश्मन है।

3. अगर-मगर करना - (बहाना बनाना) जो पूछ रहा हूँ, उसका सीधे से जवाब दो इस तरह अगर-मगर करके बात को टाल क्यों रहे हो।

4. अंधे की लाठी- (एक मात्रा सहारा) राहुल अपने बूढ़े माता-पिता के लिए अंधे की लाठी है।

5. अपनी खिचड़ी अलग पकाना - (सबसे अलग रहना) वह अपनी खिचड़ी अलग ही पकाता है। तुमसे बात भी नहीं करेगा।

6. अपने मुँह मिया मिट्ठू बनाना- (अपनी तारीफ स्वयं करना) अपने मुँह मिया मिट्ठू बनाना अच्छी बात नहीं होती है।

7. आकाश पाताल एक करना - (बहुत परिश्रम करना) परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए मैंने आकाश पाताल एक कर दिया।

8. अपने पैरों पर खड़ा होना - (दुसरों पर अश्रित न रहना) पढ़ाई पूरी होने के बाद वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

9. आकाश-पाताल का अन्तर- (बहुत अधिक अन्तर होना) दोनों बहनो के स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर है।

10. अपने पैरों पर कुल्हारी मारना - (स्वयं अपना नुकसान करना) उससे दुश्मनी कर के तुमने अपने पैरों पर स्वयं कुल्हारी मार ली।

11. <u>आसमान पर चढ़ना</u>- (घमंड करना) परीक्षा में प्रथम स्थान पाने के कारण राहुल जैसे आसमान पर ही चढ़ा गया है।

12. <u>अँगूठा दिखाना</u>- (मना करना) अपने मित्र से मैंने खिलौने माँगे तो उसने मुझे अँगुठा दिखा दिया।

13. <u>आँसू पोछना</u>- (दिलासा देना) हमारा मित्र दु:खी है। इस समय हमें उसके आँसू पोछने चाहिए।

14. <u>आग में घी डालना</u> - (क्रोध को भड़काना) दोनों मित्रों की लड़ाई में तुमने आग में घी डालने का काम किया।

15. <u>आँखों पर पर्दा पड़ना</u> - (सही-गलत नहीं समझ पाना) तुम्हारी आँखो पर पत्थर पड़ा हुआ है, इसलिए तुम्हें अपने बेटे की गलतियाँ नहीं दिख रही है।

16. <u>आँख खुलना</u> - (सच्चाई का पता चलना) अपने मित्र से धोखा खाने के बाद ही उसकी आँखें खुली।

17. <u>उन्नीस बीस का अन्तर होना</u> - (बहुत कम अन्तर होना) दोनों भाइयों के चेहरे में बस उन्नीस बीस का अन्तर है।

18. <u>आँखों में धूल झोंकना</u>- (धोखा देना) चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।

19. <u>उँगली उठाना</u>- (गलती दिखाना) अच्छे लोगों पर कोई भी बिना कारण उँगली भी नहीं उठा सकता है।

20. <u>इधर-उधर की हाँकना</u>- (व्यर्थ की बात करना) इधर-उधर की बात मत करो, अपने काम पर ध्यान दो।

21. <u>कान भरना</u> - (भड़काना, चुगली करना) राहुल ने अपने मित्र के खिलाफ़ आफिस के अधिकारी के कान भरें, इसलिए उसे आफिस से निकाल दिया गया।

22. <u>ईंट से ईंट बजाना</u> - (नष्ट कर देना) युद्ध में भारतीय सौनिकों ने दुश्मनों की ईंट से ईंट बजा दी।

23. <u>कीचड़ उछालना</u> - (अपमानित करना) तुम्हें बिना बात के किसी के ऊपर कीचड़ उछालना नहीं चाहिए था।

24. <u>ईंद का चाँद होना</u> - (बहुत दिनों बाद दिखना) तुम तो ईंद का चाँद हो गए हो, काफी दिनों से मिले नहीं।

25. <u>कलई खुलना</u> - (भेद खुलना) कल स्कूल में झूठ बोलकर छुट्टी ली थी परन्तु आज सबके सामने मेरी कलई खुल गई और मुझे सज़ा दी गई।

26. <u>उल्टी गंगा बहाना</u> - (कठिन कार्य करना) तुम्हारे लिए परिक्षा में पास होना उल्टी गंगा बहाने के समान है।

27. <u>कोरा जवाब देना</u> - (साफ़ इन्कार कर देना) कल मैंने शोभा से कुछ पैसे उधार माँगे तो उसने कोरा जवाब दे दिया।

28. <u>उँगली उठाना</u> - (दोष देना) सबूत नहीं होने पर किसी पर उँगली नहीं उठानी चाहिए।

29. <u>कमर कसना</u> - (तैयार होना) इम्तिहान पास आ रहा है। उसकी तैयारी करने के लिए कमर कसके मेहनत करनी होगी।

30. <u>कलेजे क टुकड़ा</u> - (बहुत प्रिय) इकलौता बेटा होने के कारण वह अपने माता पिता के कलेजे का टुकड़ा है।

31. <u>खून का घूँट पीकर रह जाना</u> - (गुस्सा सहन कर लेना) भरी सभा में अपमानित होकर भी राजा युधिष्ठिर खून का घूँट पीकर रह गए।

32. <u>कफ़न सिर पर बाँधना</u> - (मरने को तैयार रहना) सैनिक युद्ध में कफ़न सिर पर बाँध कर चलते हैं।

33. <u>घर में गंगा बहना</u> - (सभी सुविधाएँ उपलब्ध होना) कालेज में दाखिला लेने के लिए तुम्हें कोई परिश्रम नहीं करना पड़ेगा क्योंकि तुम्हारे मामा जी कालेज के प्रोफेसर हैं। तुम्हारी तो घर में ही गंगा बहती है।

34. <u>कटे पर नमक छिड़कना</u>- (दु:खी व्यक्ति को और दु:ख देना) वह बहुत दु:खी है तुम उसके कटे पर नमक मत छिड़को।

35. <u>घाट-घाट का पानी पीना</u> - (सभी जगहों या क्षेत्र का अनुभव होना) तुम्हें हर क्षेत्र की जानकारी है, तुमने तो घाट-घाट का पानी पीया है।

36. <u>कमर टूटना</u> - (हिम्मत टूटना) इतना परिश्रम करने के बावजूद असफल होने से मानो उसकी कमर ही टूट गई है।

37. <u>घाव हरा होना</u> - (पुराना दु:ख याद होना) तुम्हें देखकर मेरे घाव फिर से हरे हो गए।

38. <u>कान का कच्चा होना</u> - (चुगली पर ध्यान देना) रोहित अच्छा लड़का है पर कान का कच्चा है।

39. <u>घुटने टेकना</u> - (हार मानना) भारतीय सेना के सामने शत्रु सेना ने अपने घुटने टेक दिए।

40. <u>कान पर जूँ न रेंगना</u> - (किसी बात पर ध्यान न देना) इतना समझाने के बाद भी तुम्हारे कान पर जूँ तक नहीं रेंगती है।

41. <u>चूड़ियाँ पहनना</u> - (कायर बनना) पहलवान होकर भी यदि तुम इस छोटो से आदमी को नहीं हरा सकते तो तुम्हें चूड़ियाँ पहन लेनी चाहिए।

42. <u>खरी-खोटी सुनाना</u> - (भला-बुरा कहना) राहुल ने मोनू को खूब खरी-खोटी सुनाई।

43. <u>छक्के छुड़ाना</u> - (बुरी तरह हराना) भारतीय क्रिकेट टीम ने पाकिस्तानी टीम के छक्के छुड़ा दिए।

44. <u>गाल बजाना</u> - (तर्क करना) उसकी बातों पर ध्यान मत दो, उसकी तो आदत है गाल बजाने की।

45. <u>ज़मीन पर पाँव न पड़ना</u>- (घमंड होना) रूपा अपने आप को बहुत सुन्दर समझती है इसलिए उसके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ते।

46. <u>खून पसीना एक करना</u>- (कठिन परिश्रम करना) परीक्षा में प्रथम स्थान पाने के लिए मैंने खून पसीना एक कर दिया।

47. <u>झक मारना</u> - (समय को व्यर्थ करना) नौकरी से निकाल दिए जाने के बाद वह सारा दिन झक मारता फिरता है।

48. <u>गागर में सागर भरना</u>- (कम शब्दों में अधिक कहना) बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।

49. <u>टाँग अड़ाना</u>- (विघ्न डालना) अच्छे काम में टाँग अड़ाना तुम्हारी पुरानी आदत है।

50. <u>गड़े मुर्दे उखाड़ना</u> - (बीती बातों को याद करना) गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई फ़ायदा नहीं है, उन्हें भूल जाओ।

51. <u>ठन-ठन गोपाल</u> - (कंगाल होना) आजकल उसकी आर्थिक हालत बिलकुल ठीक नहीं है, वह ठन-ठन गोपाल है।

52. <u>गुड़-गोबर होना</u> - (बनती बात बिगड़ जाना) तुम्हारी बेबकूफी के कारण सारा गुड़-गोबर हो गया।

53. <u>डूब मरना</u>- (लज्जित होना) इतना पढ़ा-लिखा होने के बावजूद भी तुम इतने साधारण से सवाल का ज़वाब नहीं दे पाए, तुम्हें तो डूब मरना चाहिए।

54. <u>घी के दिए जलाना</u> - (अधिक खुश होना) बहुत दिनों के बाद बेटे के सकुशल घर लौट जाने पर माँ ने घी के दिए जलाए।

55. <u>ताक में रहना</u>- (मौके की तलाश करना) आज बच्चे बस इसी ताक में हैं कि कब उन्हें खेलने का मौका मिले।

56. <u>घर सिर पर उठाना</u> - (बहुत शोर करना) बच्चों ने पूरे घर को सिर पर उठा लिया है।

57. <u>थाली का बैंगन</u> - (किसी एक पक्ष में न रहना) तुम तो थाली के बैंगन हो। जिधर का पलड़ा भारी होता है, उसी तरफ़ हो लेते हो।

58. <u>घोड़ें बेचकर सोना</u> - (गहरी नींद में होना) इतना परिश्रम करने से वह थककर घोड़े बेचकर सो गया है।

59. <u>दर-दर फिरना</u> - (हर जगह भटकना) इतना पढ़ा लिखा होने के बाद भी अभी तक वह नौकरी के लिए दर-दर भटक रहा है।

60. <u>घाव पर नमक छिड़कना</u> - (दु:खी को और कष्ट देना) उससे ज़्यादा पूछ ताछ करके तुम उसके घाव पर नमक मत छिड़को।

61. <u>दम भरना</u> - (बड़ी-बड़ी बातें करना) वैसे तो राधा सबके सामने अच्छी लड़की होने का दम भरती है परन्तु कल उसने सबके सामने अपने पिता की बात मानने से इनकार कर दिया।

62. <u>चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना</u> - (भयभीत होना) पकड़े जाने पर चोर के चेहरे की हवाइयाँ उड़ गई।

63. <u>दाने-दाने को मोहताज होना</u> - (अत्यंत गरीब होना) जुए में सब कुछ हारने के बाद आज राहुल दाने-दाने को मोहताज हो गया है।

64. <u>चादर से बाहर पैर फैलाना</u> - (हैसियत से अधिक खर्च करना) बेटी की शादी में उसने अपने पैर चादर से बाहर फैला कर खर्च किया।

65. <u>दिन फिरना</u>- (भाग्य का फिरना) लौटरी के पैसे जीतकर उसके तो दिन ही फिर गए।

66. <u>छाती पर साँप लोटना</u> - (दूसरे की तरक्की देखकर जलना) अपने मित्र की सफलता देखकर राहुल की छाती पर मानो साँप लोटने लगे।

67. <u>दुम-दबाकर भागना</u>- (डरकर भाग जाना) पुलिस की गाड़ी की आवाज़ सुनते ही सभी चोर दुम-दबाकर भाग गए।

68. <u>छठी का दूध याद आना</u> - (कठिनाई में पड़ना) पहलवान से लड़ते समय कुश को छठी का दूध याद आ गया।

69. <u>दौड़-धूप करना</u>- (कठिन परिश्रम करना) बहुत दौड़-धूप करने पर भी उसे यह नौकरी नहीं मिली।

70. <u>छोटा मुँह बड़ी बात</u>- (अपनी हैसियत से अधिक बोलना) छोटा मुँह बड़ी बात करने से पहले अच्छी तरह सोच लेना नहीं तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

71. <u>नानी याद आ जाना</u> - (होश ठिकाने आना) इतनी मार खाने के बाद उसे अपनी नानी याद आ गई।

72. <u>जान पर खेलना</u> - (खतरा उठाना) देश को आंतकवादियों से बचाने के लिए वह सैनिक जान पर खेल गया।

73. <u>नींद हराम होना</u> - (परेशान होना) पड़ोस में शादी होने से इतना शोर हो रहा है कि हमारी तो नींद हराम हो गई है।

74. <u>तिल का तार बनाना</u> - (छोटी सी बात को बड़ा करना) तिल का तार बनाने की तुम्हारी पुरानी आदत है।

75. <u>पानी-पानी होना</u>– (लज्जित होना) भरी कक्षा में डाँट खाने के बाद शोभा शर्म के मारे पानी-पानी हो गई।

76. <u>दाँत खट्टे करना</u> - (बुरी तरह हराना) हिन्दुस्तानी सेना ने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिए।

77. <u>पीठ दिखाना</u> - (हारकर भागना) मुझे युद्ध में हार जाना मंजूर है परन्तु पीठ दिखाकर भागना मंजूर नहीं है।

78. <u>दाहिना हाथ होना</u>- (सहायक होना) तुम मेरे दाहिने हाथ हो। तुम्हारे बिना मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ।

79. <u>भीगी बिल्ली होना</u> - (भयभीत होकर रहना) वैसे तो रवि बहुत बहादुर बना फिरता है परन्तु अपनी बड़ी बहन के सामने भीगी बिल्ली बन जाता है।

80. <u>दिन दुनी रात चौगुनी तरक्की करना</u>– (बहुत जल्दी अधिक तरक्की करना) सौरभ आजकल दिन दुनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है।

81. <u>साँप को दूँध पिलाना</u> - (दुष्ट को आश्रय देना) मुझे नहीं मालुम था कि इतने दिनों से मैं साँप को दूध पिला रही हूँ।

82. <u>ज़मीन पर पाँव न पड़ना</u> - (घमंड होना) अधिक तरक्की हो जाने से उसके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे हैं।

83. <u>सिर खाना</u> - (तंग करना) अब चुप हो जाओ जब से स्कूल से आए हो तब से मेरा सिर खाए जा रहे हो।

84. <u>नमक हलाल होना</u> - (कृतज्ञ होना) रामू अपने मालिक का नमक हलाल नौकर है।

85. <u>हाथ मलना</u> - (पछताना) समय रहते परिश्रम नहीं करने से बाद में हाथ मलना पड़ता है।

86. <u>नमक हराम होना</u> - (कृतघ्न होना) तुम्हारी इतनी सहायता करने पर भी तुम नमक हराम ही रहे।

87. <u>हाथ धो बैठना</u> - (खो देना) अपने से बड़ों से तमीज़ से बात करो नहीं तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।

88. <u>नौ-दो-ग्यारह होना</u> - (भाग जाना) पुलिस के आने से पहले चोर नौ-दो-ग्यारह हो गए।

89. <u>होश उड़ जाना</u> - (घबड़ा जाना) घर में चोरी होने की बात सुनकर मेरे तो होश ही उड़ गए।

90. <u>पानी-पानी हो जाना</u>- (शर्मिंदा होना) परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर वह शर्म से पानी-पानी हो गया।

91. <u>सिर नीचा करना</u> - (बेज्ज़त करना) अपने बेटे की गलती के कारण मोहिनी का सिर नीचा हो गया।

92. <u>फूला न समाना</u> - (अधिक प्रसन्न होना) परीक्षा में सफल हो जाने से नरेश फूला नहीं समा रहा है।

लोकोक्तियाँ

बहुत अधिक प्रचलित और लोगों के मुँहचढ़े वाक्य लोकोक्ति के तौर पर जाने जाते हैं। इन वाक्यों में जनता के अनुभवों का सार होता है।

1. <u>अंत भला तो सब भला</u> - अच्छे काम का अंत अच्छा होता है।

2. <u>अपनी-अपनी ढ़पली, अपना-अपना राग</u> - (प्रत्येक का अपना अलग-अलग विचार होना) इस घर में कोई किसी की नहीं सुनता सबकी अपनी-अपनी ढ़पली, अपना-अपना राग है।

3. <u>अंधों में काना राजा</u>- (मूर्खों में थोड़ा पढ़ालिखा भी विद्वान माना जाता है) इन सब कम पढ़े लिखे लोगों से तो तुम ठीक हो - अंधो में काना राजा होता है।

4. <u>अंधा क्या चाहे दो आँखें</u> - (इच्छित वस्तु का मिलना) शोभा को नौकरी की तलाश थी तभी अचानक उसे स्कूल में नौकरी मिल गई, अंधा क्या चाहे दो आँखें।

5. <u>अधजल गगरी छलकत जाए</u> - (कम ज्ञान वाले व्यक्ति अधिक दिखावा करते हैं) उसे पढ़ना लिखना अधिक नहीं आता है परन्तु अधिक पढ़ा-लिखा होने का दिखावा करता है - अधजल गगरी छलकत जाए।

6. <u>अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत</u>- (समय बीत जाने पर पछताने से क्या फायदा) जब इम्तिहान का समय था तब तुमने पढ़ाई नहीं की और इम्तिहान के बीत जाने के बाद चिंता हो रही है, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

7. <u>अक्ल बड़ी या भैंस</u>- (बुद्धि के आगे शारीरिक शक्ति का महत्व गौण होता है।) कमज़ोर रामा ने बुद्धि के दम पर कुश्ती जीतकर सबको सोचने पर विवश कर दिया कि अकल बड़ी या भैंस।

8. <u>आ बैल मुझे मार</u>- (जान बूझकर विपत्ति मोल लेना) पहले तो युद्ध में उसे खुद बुलाया और अब डर लग रहा है, यह तो वही बात हो गई आ बैल मुझे मार।

9. <u>आगे कुआँ पीछे खाई</u>- (सभी तरफ विपत्ति का होना) तुम्हारी बात मानता हूँ तो उससे मार खानी पड़ेगी और अगर उसकी बात मानूंगा तो तुम मुझे नहीं छोड़ोगे। मेरे आगे कुआँ है और पीछे खाई।

10. <u>आग लगने पर कुआँ खोदना</u> - (मुसीबत आ जाने के बाद उपाय ढूंढ़ना) पहले तो तुम खेलते रहे और अब जब परीक्षा का समय नज़दीक आ गया है तब तैयारी करने चले हो, आग लगने पर कुआँ खोद रहे हो।

11. <u>अंधेरे घर का उजाला</u>- (घर का अकेला लाडला) राहुल अपने माँ बाप के अंधेरे घर का उजाला है।

12. <u>ओखली में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डर</u>- (कठिन काम शुरू करने के बाद मुसीबतों से डर नहीं लगता) इतने बड़े गुंण्डे को जब सज़ा दिलवाने की ठान ही ली है तो कष्टों से क्यों घबरा रहे हो।

13. <u>अपना उल्लू सीधा करना</u>- (अपना स्वार्थ सिद्ध करना) रोहित हमेशा अपना उल्लू सीधा करने में लगा रहता है।

14. <u>कंगाली में आटा गीला</u> - (एक कष्ट पर दूसरा कष्ट) एक तो परीक्षा में बैठने नहीं दिया गया ऊपर से स्कूल से निकाल दिया गया कंगाली में आटा गीला।

15. <u>उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे</u> - (दोषी व्यक्ति का निर्दोष को डाँटना) मैं तुमसे अपने पैसे माँग रहा हूँ और तुम मूझी को डाँट रहे हो - उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

16. <u>खोदा पहाड़ निकली चुहिया</u> - (अधिक परिश्रम करने पर कम फल मिलना) इतनी मेहनत करने पर भी परीक्षा में नम्बर कम आए, खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

17. <u>कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली</u> - (दो व्यक्तियों की प्रतिष्ठा में अंतर) तुम कुछ भी कर लो मुझ जैसा बिल्कुल भी नहीं बन सकते – कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली।

18. <u>न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी</u> - (मुसीबत के कारण को ही नष्ट कर देना) दोनों परिवारों में इस दीवार को लेकर लड़ाइयाँ हो रही है तो इस दीवार को ही तोड़ दो - न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

19. <u>एक पंथ दो काज</u> - (एक ही काम से दो लाभ) अपने दोस्त से मिलने गया था। वहीं पर उससे अपने व्यवसाय के लिए कुछ रूपए भी ले लिया – एक पंथ दो काज हो गए।

20. <u>बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद</u>- (अयोग्य को किसी मुल्यवान वस्तु की पहचान नहीं होती) तुम्हें नहीं पता यह घड़ी कितनी कीमती है। इसीलिए इसे गंदा कह रहे हो, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

21. <u>घर की मुर्गी दाल बराबर</u> - (अपनी चीज़ की कोई कद्र नहीं होती) तुम्हारी बड़ी बहन खुद इतनी पढ़ी-लिखी है और तुम पढ़ने के लिए किसी और के पास जाते हो। यह तो वही बात हो गई घर की मुर्गी दाल बराबर।

22. <u>दाल-भात में मूसरचंद</u> - (हर बात में टांग अड़ाने वाला) हम दोनों आपस में पढ़ाई के विषय पर बात-चीत कर रहे थे कि उसी समय शीला दाल-भात में मूसरचंद जैसी आ गई।

23. <u>साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे</u>- (काम भी हो जाए और कोई हानि भी न हो) अपने दुश्मन को सज़ा देने का कोई ऐसा उपाए सोचों जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।